शक्ति स्वरूपा दादी ने की तैयार एक सशक्त सेना

हर पल कर्मातीत अवस्था को व्यक्त करने वाली, उमंग-उत्साह दिलाकर पूरे ईश्वरीय परिवार को यज्ञ के प्रति वफादार बनाने वाली, मुरली व मुरलीधर को सेवा और चिंतन का आधार बनाकर खुद को न्यारा-प्यारा रखने वाली, बापदादा की मूरत और उसे सारे दिन नैनों में समाये रख सभी को वैसा ही साक्षात्कार कराने वाली शक्ति स्वरूपा दादी जी ने हम सभी को अपने जैसा ईश्वरीय सेवाधारी बनाकर यज्ञ सेवा की बागडोर सौंपी।

दादी जी की उपस्थिति मात्र से ही खुशी का माहौल बन जाता

दादी जी से मिलने पर अपनेपन की महसूसता होती थी। ऐसा लगता था कि सच्चे परिवार से मिलन हो रहा है। जब पार्टी मधुबन से वापस जाती थी तो हर एक से पूछती थी कि मधुबन से क्या लेकर जा रहे हो। जाने वाले भाई-बहनों को मिश्री, इलाइची व बादाम खिलाकर भेजती थी। इस प्रकार हर एक को इतना प्यार, स्नेह व शक्ति दादी जी से मिलती थी। यज्ञ की पहली टेलीफिल्म 'दिव्य ज्योति' जब बनाई थी। तब मुम्बई से ही सारी प्रोफेशनल टीम मधुबन आई थी। उस समय भी वे सभी दादी जी के सहयोग व प्यार से अभिभूत हुए। सारे एक्टर्स व कैमरा आदि की टीम इतनी प्रसन्न हुई कि वे आज भी उसका गायन करते हैं। दादी जी में उमंग-उत्साह का अथाह भण्डार था। उनके सम्पर्क में आते ही सभी उमंग-उत्साह में उड़ने लगते थे। बोरीवली का बड़ा सेंटर निर्माण भी दादी जी के सहयोग व प्रेरणा से ही सम्भव हो पाया था। दादी जी के सम्मुख आते ही सभी में खुशी का वातावरण छा जाता था। - *राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा दीदी, ट्रांसपोर्ट प्रभाग की अध्यक्षा, ब्रह्माकुमारीज़*

वे विनम्रता की मूर्ति थीं, वे झुकना जानती थीं

दादी कर्म करते भी डिटैच रहती थीं। दादी हमेशा कहती थीं कि बाबा बैठा है, खड़ा है, करनकरावनहार है, तो बाबा-बाबा करके उन्होंने कभी समझा ही नहीं कि मैं कर रही हूँ। दादी ज्ञान और योग के लिए स्पेशल टाइम देती थीं। दिन में कई बार मुरली पढ़ना, अमृतवेला करना। दादी कारोबार करते भी अपनी पढ़ाई और तपस्या पर पूरा ध्यान देती थीं। दादी स्नेही मूरत थे अतः उन्हें सभी का दिल से सहयोग प्राप्त हुआ। जैसे अंग्रेजी का शब्द है हार्मनी(सद्भावना) तो दादी कहती थीं कि हार मानी और बात सुलट गई। दादी झुकना जानती थीं, उनमें लचीलापन बहुत था। उनके स्नेही स्वरूप और लचीलेपन के कारण कभी किसी कार्य में गतिरोध पैदा नहीं हुआ। दादी के सामने ईगो प्रॉब्लम तो थी ही नहीं। उनको हर घड़ी ये लगता था कि बाबा का कार्य है और बाबा का कार्य होना चाहिए। दादी न्यूज़ पेपर वालों को भी कहती थीं कि दादी के नाम पर तो एक रुपया भी नहीं है, बैंक अकाउंट ही नहीं है, तो दादी ने अपना कुछ नहीं रखा और सबकुछ बाबा के लिए किया। दादी के लिए सर्वस्व बाबा ही था। - *राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, जयपुर*

दादी की कर्मातीत स्थिति को हमने देखा

दादी जी अंतिम पांच महीने मुम्बई हॉस्पिटल में हमारे पास ही रहीं। उस समय भी हमने दादी की स्थिति वही देखी जो पूर्व में देखते थे। दादी का वही हर्षितमुख चेहरा अंत तक हमने देखा। पहले जैसे ही हमें गले लगाकर प्यार से मिलती थीं। वहाँ डॉक्टर्स भी, इतनी गंभीर बीमारी की अवस्था में उनका हर्षित चेहरा देख आश्चर्यचकित हो जाते थे। दादी उनसे मुस्कुराकर हालचाल पूछती थी तो उनका दिल भी भर आता था। उस समय भी दादी बहुत उमंग-उत्साह में कहती कि अब राखी आ रही है हम बड़े धूमधाम से मनाएंगे। इस बार यह टोली बनाएंगे, यह करेंगे, इस तरह सदा उमंग में स्वयं भी उड़ती रहीं और दूसरों को उड़ाती रहीं। इसके साथ ही दादी बीच-बीच में एकदम उपराम हो जाया करती थीं। दादी की कर्मातीत अवस्था स्पष्ट दिखाई देती थी। कोई कार्य हो तो दादी तुरंत बोल देती थी लेकिन जब उन्हें बात न करना हो तो एकदम साइलेंस में चली जाती थीं। - *राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी दीदी, बिज़नेस इंडस्ट्रीज विंग की अध्यक्षा, ब्रह्माकुमारीज़*

मधुर बोल व रूहानी मुस्कान सबको आकर्षित करती

न ये चाँद होगा, न तारे रहेंगे, मगर हम हमेशा तुम्हारे रहेंगे... इस गीत को अर्थ भाव सहित पसंद करने वाली और प्रभु की लगन में मस्त मेरी प्रिय दादी माँ के विषय में क्या लिखूँ, वो लिखूं, ऐसे लिखूं, वैसे लिखूं, ये बात लिखूं, वो बात लिखूं। न जाने कितनी बातें नज़र के आगे आती जा रही हैं। आज भी सब ताज़ा हैं। आज भी कानों में वो ममता भरे, रूहानी स्नेह भरे, मीठे मधुर बोल, आकर्षक मुस्कान और अपनापन लिए स्वागत करते दादी माँ के वह बोल आज भी कानों में गूँज रहे हैं... कलम थमी हुई है... आंखे सजल... स्थिर हैं समय भी मेरे साथ अतीत में लौटा है और वहां ही थमकर मुझे देख रहा है और मैं अतीत के उन सारे दृश्यों को निहार रही हूँ। जो सुखद पल मेरी प्रिय दादी माँ के संग गुज़रे और... मैं वहाँ ही रूक गई हूँ। देख रही हूँ, सुन रही हूँ, क्या?

वही मीठे प्यार भरे, स्वागत करते हुए बापदादा के समान, अपनी रूहानी स्नेह की बाहों में मुझे भरते हुए दादी कह रही है, आ गई नलिनी! तुम आ गई? जैसे माँ अपने बच्चे को देख खुश होती है, ऐसी मासूम खुशी लेकर सरल सी, दिव्य आभा लिए भोली पर चतुरसुजान सी प्यारी 'मेरी दादी माँ' और स्वागत के वह दो बोल सिर्फ दो बोल और फिर वह बाहों में मुझे समा लेना! क्या कहुं? उस पवित्र गोद के परम आनंद का! - *राजयोगिनी ब्र.कु. नलिनी दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, घाटकोपर, मुम्बई*

मेरे भाग्यशाली जीवन की निमित्त दादी जी

दादी जी के असीम प्यार ने मुझे मधुबन की वरदानी भूमि से इतना जोड़ दिया जो मेरा यहाँ बार-बार आना होता रहता था। जब भी स्कूल में छुट्टियां होती थी तो मैं सेवा के लिए मधुबन आ जाती थी। दादी हमेशा मुझे कहती कि दादी की नज़र तुम पर है और उस नज़र ने मुझे हमेशा उनके करीब रखा। फिर पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् मैंने अपना जीवन ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित कर दिया। जो बचपन से दादी कहती थी कि तुम पर दादी की नज़र है वो उन्होंने प्रैक्टिकल में करके दिखाया और मुझे कहा कि आपको दादी गामदेवी सेवाकेन्द्र पर भेजना चाहती है। तब से लेकर आज तक मैं गामदेवी सेवाकेन्द्र पर अपनी अथक सेवायें दे रही हूँ। जबकि मैं सौराष्ट्र(जूनागढ़) की थी, मेरे लिए ये स्थान बिल्कुल नया था लेकिन दादी के अमर बोल मेरे लिए वरदान बने रहे। दादी की उस पालना व सकाश ने मुझे कहां से कहां पहुंचा दिया। मुझे गामदेवी सेवाकेन्द्र पर जाने के बाद पता चला कि यह तो दादी की खुद की सेवा की कर्मभूमि है। मेरे जीवन में कोई भी बात आती तो दादी बड़े प्यार से कहती 'दादी तुम्हारे साथ है' और उनके ये बोल सुनकर मैं शक्तिशाली बन जाती। आज भी मुझे यही लगता है कि जैसे दादी कह रही हैं कि 'मैं तुम्हारे साथ हूँ'। ऐसी महान विभूति आज भी सूक्ष्म में हमारे साथ हैं और रहेंगी। - *ब्र.कु. निहा दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, गामदेवी, मुम्बई*

दादी के साथ-साथ बाबा हैं ऐसा हमने अनुभव किया

एक बार दादी से मैं एकरस अवस्था कैसे रहे इस विषय पर बातचीत कर रही थी तो दादी ने कहा- किसी भी राजा को देखो वह अपने ही चिंतन में, अपनी ही मौज में खड़ा दिखाई देता है, वह किसी को इधर-उधर देखता ही नहीं। अगर ऐसे हम रहें तो एकरस अवस्था और चढ़ती कला का अनुभव कर सकते हैं। समर्पित बहनों का दादी बहुत ध्यान रखती थीं। एक स्थान के लिए दादी ने पूछा कि कितनी बहन समर्पित हैं, मैंने कहा, बारह बहनें, तो दादी ने कहा कि आप वहां जाओ, उनको ईश्वरीय पालना मिलनी चाहिए। ऐसी मीठी पालना देने वाली, ऐसा ध्यान रखने वाली दादी आज भी सभी के नयनों में समाई हुई हैं। - *राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, मुजफ्फरपुर*

हाँ जी के पार्ट ने मेरा भाग्य बदल दिया

दादी जी इतनी बड़ी हस्ती होते हुए भी हम सभी बहनों के साथ बहुत प्यार से, निर्माणता से रहीं और हमें भी रखा। एक बार दादी जब सुबह बाबा की याद में बैठी थीं तो उनको संकल्प आया कि कैलाश बहन को अहमदाबाद में भोग लगाने के लिए भेजूं। दादी ने कहा कि आपको आज सुबह ही अहमदाबाद जाना है, वहां दिवाली का भोग है, आप भोग लगा के आओ। उसके बाद मैं अहमदाबाद में गई। दादी ने कहा कि बाबा के भी आपके लिए बहुत ऊँचे संकल्प थे और वही संकल्प दादी के अंदर भी हैं, बाबा ने आपको बहुत अच्छे स्थान पर भेजा है, अभी आपकी बहुत बड़ी बेहद की सेवा शुरू होनी है। आप बस निमित्त बन करके हाँ जी करते हुए जो सेवा मिले वो करते चलो, बाबा आपको दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ाता रहेगा और फिर हम अहमदाबाद ही रह गये। सरला दीदी ने थोड़े ही दिनों के बाद नया सेंटर मणिनगर में खोला और मुझे वहाँ भेजा, वहां भी हमने 8-9 साल सेवा की। उसके बाद दीदी को संकल्प आया कि हम गांधीनगर सेंटर खोलें तो उन्होंने दादी से पूछा तो दादी ने कहा कि भले खोलो और वहां कैलाश को रखो। फिर दादी ने मुझे वरदान दिया कि आपका हाँ जी का पार्ट आपको बहुत आगे ले जाएगा।

- *राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, गांधीनगर*

दादी ने कमी को दूर कर कमाई करना सिखाया

दादी ने मुझे बचपन से ही भाग्यशाली होने का वरदान दिया था, वे कहती थीं कि बाबा ने तुम्हें कितना ऊँचा भाग्य दिया है! मुझे बचपन से ही जो भी पॉकेट मनी मिलती थी, वो मैं छुपा-छुपाकर मनीऑर्डर कर देती थी। समर्पित होने के बाद मैं हैदराबाद में रहने लगी तो दादी हर साल वहां आया करती थीं। उन्हें वहां आकर सिन्ध की याद आती थी। आज भी मुझे लगता है कि दादी के वरदानों से ही हैदराबाद में सेवा का इतना विस्तार हुआ है। मुझे ऐसा लगता है कि दादी आज भी मेरे साथ हैं, मुस्कुराते हुए हमेशा मेरे सिर पर हाथ रखती हैं। मैं दादी के साथ बिताए दिन कभी नहीं भूल सकती। मुझे बहुत प्यार भरी पालना दादी से मिली है, वो सारे पल मेरे लिए अविस्मरणीय हैं। उनकी निर्माणता, उनकी सरलता, उनकी मधुरता, उनका करुणामयी स्वभाव मेरे जीवन में ऐसा समाया हुआ है, जिन्हें मैं कभी भूल नहीं सकती। - *ब्र.कु. कुलदीप दीदी, निदेशिका, शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर, हैदराबाद*